Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2411IV04V12P0006

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research
Issue–III(IV), Volume–XII

डॉ . अमित धर्मसिंह कृत काव्यमय आत्मकथा 'हमारे गाँव में हमारा क्या है ' में दलित संवेदना

डॉ.अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
[अध्यक्ष हिंदी विभाग]
डॉ. श्री . नानासाहेब धर्माधिकारी कॉलेज गोवे- कोलाड ,
तहसील - रोहा ,जिला - रायगड , महाराष्ट्र
पिन- ४०२३०४ मो - ९७६६७३१४७०
Email - sureshamalpure05@gmail .com

सारांश :-

हिंदी साहित्य में दलित आत्मकथा ,उपन्यास ,नाटक और कविता बहुत सारे लेखकोंने लिखे है । काव्यमय आत्मकथा लिखने का प्रयास डॉ. अमित धर्मसिंह ने किया है ।एक समीक्षक एवं साहित्यकार के रूप में आज के समय में सर्वोपरी प्रसिद्ध हो गये है ।उनकी यह काव्यमय आत्मकथा पुरे समाज तथा दलित समाज के लिए एक प्रेरणादायी कृती लगती है । अपने बाल्यावस्था में घटित घटना शिक्षा एवं नौकरी पाने तक का संघर्ष ,समाज के साथ बीते घटनाय ,ऐसे अनेक संवेदनात्मक क्षण इस काव्यात्मक आत्मकथा में चित्रित किया है ।अपने भोगी हुई पिडा, भय ,संत्रास की अनुभूती का हु-बे-हू- चित्रण डॉ.अमित धर्मसिंह ने किया है ।

कुंजी शब्द :- काव्यमय, आत्मकथा, अभावग्रस्त ,संवेदनात्मक पक्ष ,दलित अभिव्यक्ती ,आक्रोश , सृजनात्मकता आदि ।

संशोधन पद्धति:- विश्लेषणात्मक सर्वेक्षणात्मक संशोधन पद्धति ।

संशोधन के उद्देश्य :-

१] डॉ . अमित धर्मसिंह का परिचय को जानना ।
२] काव्यात्मक आत्मकथा में दलित जीवन को देखना।
३] प्रस्तुत आत्मकथा में दलित संवेदना के पक्ष को देखना ।
४] प्रस्तुत काव्यात्मक आत्मकथा में आत्मकथा के संदेश को देखना ।

प्रस्तावना :-

प्रस्तुत काव्यमय आत्मकथा ने भारत जैसे देश के प्रत्येक पाठक को एक नया संदेश दिया है । एक युवा रचनाकार की यह कृती असंख्य समीक्षकों के लिए नया मोड दिया है। हमारे समाज व्यवस्था में चौथा वर्ग ऐसी प्रताडना झेलता आया है उनके दुखों की एक लंबी श्रखला यह कृती है। गाँव और शहर में निवास करने वाले दलित जातियों पर जाति का ठप्पा इस इस तरह से चिपका रहता है की उनके संसार छोडने के बाद भी वह उनका पीछा नही छोडता। शवदाह स्थलों को भी आज बाँटा गया है। समाज मंदिरो में ,बावडी भी बाँटा गया है। इस सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए हजारो सालो से संत महात्मा ने संदेश दिया फिर भी यह समाप्त नही हुई। इस जातीय दंश को पूर्ण तया मिटाने में आज समाज सफल नही हो पाया है। यह सबसे बडी समस्या समाज के लिए संवेदना का पक्ष है।

हमारे गाँव में हमारा क्या है ,में दलित संवेदना के पक्ष

अमित धरम सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फर नगर के कसबा ककरवली में 18 जून 1986 को हुआ। प्राथमिक शिक्षा गाँव में ही हुई ,पढाई में बहुत होशियार थे । कक्षा पाच पास होने के बाद इनका मन गाँव वहल्ला के ही स्कूल में जाने का हुआ । 1999 में इंटर कॉलेज से पास हुए , आगे ग्यारहवी भी पास हो गये। बारावी की परीक्षा छुट गई बहुत साल के बाद सेकंड डिव्हिजन में पास हो गये। आगे उच्च शिक्षा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ से एम .ए .और दिल्ली विश्वविद्यालय से पी .एच.डी पुरी की । 2014 में कविता लेखन का प्रारंभ कक्षा पांचवी से ही शुरू कर दी थी। कोरोना काल में भी उनका काव्यसंग्रह कोरोना काल में दलित कविता प्रकाशित हुई । 2019 में ‘ हमारे गाँव में हमारा क्या है ‘ यह काव्यमय आत्मकथा प्रकाशित हुई ।

इस काव्यमय आत्मकथा के बारे में हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ.रामनिवास जी कहते है- “कवीने इसमें अपने बाल्यावस्था में भोगी हुई निर्धनता को यथार्थ रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। जमीनदारों द्वारा किसानो का शोषण किया जाता है। ठेकेदार भट्टे में मजदूर को झोंक देते है। उसके झुलसने के साक्ष्य तक मिटा देते है। गाँव में रहने वाले दलित इस तरह के अपमान और तिरस्कार झेलने के लिए सदैव तयार रहते है। उनके दुःख पीडा को कोई सुनने वाला नही होता उनके बालक खट्टे ,कच्चे डंठलों आदि में नमक लगाकर चटकारे लेकर अपना पेट भरते है। “- १

भारत देश में गाँव हिंदी साहित्य तथा कविता अधिकांश साहित्यकारोने कवियों ने अपने साहित्य में गाँव का यथार्थ चित्रण किया है ।आपने गाँव को जानने और याद करने की सबकी अपने अपने स्मृतियाँ और अनुभूतीयाँ होती है । खेत , खलियान,मंदिर, घर, गली ,धर्मशाला यथार्थ चित्रण आदि मिलता है । डॉ. कवी अमित धर्म सिंह अपने इस काव्य में आत्मकथा की पहिली कविता 'हमारे गाँव में हमारा क्या है 'में लिखते है -

" न आँगन हमारा है ना खेत हमारा है
ये खेत मलखान का है , ये दुकान लाला की है
ये चक्क ये धुम्मी का है , ये बाग खान का है
वो कोल्लू पठाण का है ये धर्मशाला की है
वो मंदिर जैनियों का है........
हमारे गाँव में हमारा क्या है ,ये हम आज तक नही जान पाये।"-२

इसमें दलित समाज की संवेदनाय को अंकित किया है। जिनमें जिंदगी का अभाव और उपेक्षा का जीवन जी रहे दलित वर्ग का चित्रण है। संदेह नही की अमित धर्म सिंह की कविता में संघर्ष और जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत काव्यमय आत्मकथा हमारे गाँव में हमारा क्या है 2019 में बोधी प्रकाशन जयपुर से प्रकाशित कृती में कवीने ये काव्यसंग्रह बच्चों को समर्पित करते हुए लिखा है - उन तमाम बच्चों को जिनका बचपन किसी उत्सव की तरह नही , किसी गहरे शोक की तरह बीतता है । " - ३

इसी तरह दलितो द्वारा लिखी गई अनेक रचनाओ में दलित बच्चों की ग्रामीण जीवन की दुर्दशा का मर्मस्पर्शी वर्णन मिलता है ।फिर चाहे ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा जूठन में बालक ओमप्रकाश हो या श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा मेरा बचपन मेरे कन्धों पर में श्यौराज बालक छुआ छूत के साथ घोर गरीबी से जूझता दलित बचपन अंतस को झकझोर देता है ।

डॉ.अमित सिंह के इस काव्यमय आत्मकथा के बारे में कश्मीर सिंह जी लिखते है – " इनकी कविता साहित्यिक अनुसंधान केंद्र की प्रयोगशाला में तैयार होकर नही आये बल्की यथार्थ के धरातल पर समस्याओं से दो -दो हात करती , हृदय की हर धडकन से उठती हुक को आत्मसात करती संघर्षशीलता का दामन थामे कागज पर उतरती है।"- ४

प्रस्तुत काव्यमय आत्मकथा में अमित सिंह ने त्रासदी पूर्ण जीवन के संघर्ष के चित्रण के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ इस काव्यसंग्रह में लिखा है ।बचपन के दिनो में अपमानित स्थिती या त्रासदिओं से युक्त जीवन की वेदना को प्रकट किया है ।जैसे कवी लिखते है– " भूख पैर न टिकने देती

कागज में नमक लेकर
नेकर के नेफफे में धसुंडाते
कोई छोटा- मोटा चक्कू
बुशर्ट में छुपकर ,दो -तीन यार मिलकर जंगल में निकल जाते
……….शहातून, गाजर, मुली ,छोटी- छोटी हरी सरसों की डंटल।"-५

प्रस्तुत कविता में अपने बचपन की यादे कवीने ताजा की है ।बचपन की सच्चाई का यथार्थ रूप है। दुसरो के खेत से बथुआ तोडकर लाना , जामुन और आम चुरा कर खाना वैसे हरकते बच्चे अपने बचपन में करते है।बचपन किसी जाति या वर्ग से जुडा नही होता है । जैसे चाहे वैसे बच्चे अपना बचपन बिताते है ।गरीब के बच्चों का तो पेट भरणे का संघर्ष बचपन में ही शुरू हो जाता है ।भूख लगने पर बच्चे जब घर जाकर अपने माँ से पुछते है की रोटी क्यों नही बनाये ? तब माँ कात्रदृष्टी से बच्चों को देखती तो उसकी आँखों में विवशता झलकती दिखाई देती है ।इस तरह वेदना को मुखर स्वर देती उनकी यह बचपन के पकवान कविता प्रस्थापित यथास्थिती समाज पर करारा चोट करती है। यथास्थिती की यह आज भी वैसी ही बनी हुई है।यह सच्चाई है सदियों की सडांग को डॉ. आंबेडकर जी के व्हिजन से ही साफ किया जा सकता है शिक्षा की तलवार ही गरीबी को काट सकती है ।इसलिये कवीने शिक्षा को अंगीकार किया है। बरसात कविता में दारुन स्थितियों को बया करते हुए कवी लिखते है - " हमारी छोटी उमर में , बरसात बडी मुश्किल लेके आती

हमने बरसात में कागज की नाव चलाई
गलियों में भरे पानी मे उछले कूदे
बारिश बंद करवाने के लिए
उलटे तवे -परात बजाये
मगर यह सब ज्यादा दिन न चला ,बारीश के साथ -साथ
छत का टपकना बढ़ जाता

बाल्टी ,तसला ,भिगौना बर्तनों आदि रखें जाते
फिर भी नौबत
बर्तनों और कपड़ों के भीगने की आ जाती। "-६

इस तरह बरसात के दिनों की पीडा का दर्द यथार्थ रूप में कवीने चित्रित किया है । उनकी कविता में पीडा की यह अनवरत धारा अपने नये -नये रूपों में दिखाई देती है । उनकी यह कविता समाज पर चोट करती है ।

डॉ.अमित धर्मसिंह के इस काव्यमय आत्मकथा में काली नदी,जरूरत किताबे ,वर्षा ऋतु , शिकंजा ,टोटे की निशानी ,गुल्लक से पासबुक ,रखवाले ,प्रलाप ऐसे ४१ कविता है । समाज के आक्रोश, शोषण तथा संघर्ष का बयान कविता करती है । वरिष्ठ साहित्यकार कृष्ण सुकुमार आपने समीक्षात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहते है - " कवी यहाँ आपको असामान्य दारुण स्थिती से परिचित करा भर रहा है, जिनको भगतते हुए व बडा हुआ है ....स्वर यहाँ न आकर्षित है न शिकायत भरा ।" – ७

उनकी प्रसिद्ध कविता 'पढाई के टोटके' में लिखते है-

" किताबो से सामना शुरू हुई हुआ था,
न घडी थी ,न टेम देखना आता था ,
अंदाज से ही सुबह उठते ,तयार होते और स्कूल जाते ।" - ८

इस कविता में पढाई की कहानी बताई है। ना कोई उनके पास घडी थी समय को देखने के लिए या तो कोई ऐसा बताने वाला व्यक्ति था। सुबह उठकर नहा -धोकर सिधा स्कूल का रास्ता देखते । वही पढाई करते थे । कभी देर हुआ तो दुबळे महाराज का जप मन में मन करते थे । बच्चों के साथ झगडे भी होती थे । किताब मे मोरपंख रखते, उसे गुड्डी कहते थे। गलती से किताब हात से गिर जाये तो उसे माथे पर लगाकर चुमते थे। मास्टरजी कहते तेज दिमाग के लिए सुरज की तरफ पिछवाडा करके मल त्यागना चाहिए । कभी - कभी भूखे पेट स्कूल जाते ऐसे हालत में उन्होने पूरी पढाई की यह विशेष है । हमारे गाँव में हमारा क्या है निश्चित रूप से एक आत्मकथात्मक काव्यसंग्रह है किंतु इसमे संकलित कविता में अक्षर -अक्षर ,शब्द -शब्द पिरोई गई पीड़ाएँ तो हर उस बालक की है ,और उस व्यक्ति की है, और पुरे समाज की है, जो अभाव में जन्मता है ,अभाव में ही पलता है ,एक दिन अभावों को ही समर्पित हो जाता है ।

'काली नदी 'कविता में शहरों के बीच से गुजरती नदी ही प्रदूषित नही है ,अब तो गाँव और जंगल के बीच से गुजरने वाली नदियाँ भी इस भयानक स्थिती से बची नही है । 'नुसके' कविता में गरीब मजदूर लोगों के बच्चे कठीण जीवन जीने को मजबूर है ।नाम मात्र की देशी दवा के बल पर कस्टमय जीवन जिया करते है । नन्ही -नन्ही जानो में भी गजब की प्रतिरोधक क्षमता ,व्यवहारिकता और सपाट जीवन की झलक दिखाई देती है । 'जरुरत' इस कविता में बेगार करवाने वाली दुष्ट बुढ़िया का और छोटे बच्चे जो सरल स्वभाव लिए आतनी आत्मनिर्भर बनाने का सपना संजोते है ।उनके भोलेपण में ठगे जाने का सुंदर चित्रण है।' सिकंजा 'कविता में भट्टे पर जवान लडके के पाँव आवे धस जाते है। कुछ ईटों का नुकसान मालिक के लिए जादा किमती।

'गुलक के पासबुक 'में कवीने गरिबी और बेइमानी का यथार्थ चित्रण किया। 'रखवाली' कविता में कवीने अपने ताऊ का जिक्र किया है की कलेसर में अपना पाँव गवा बैठे है । खतिहार मजदूर का शोषण किया है।' प्रलाप 'इस कविता में कवीने तंगी में पल रहे देश की बहुतांश आबादी का यथार्थ चित्रण किया है। वरिष्ठ दलित लेखक साहित्यकार पुष्पा विवेक डॉ. सिंह के इस काव्यमय आत्मकथा के बारे में कहते है – " डॉ .अमित धर्मसिंह द्वारा लिखित काव्यमय आत्मकथा को समाज के ज्वलंत मुद्दों और समस्या को उठाती है।आत्मकथा मानती है मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी की भाती मनोविज्ञान के आधार पर उत्पन्न संवाद को चित्रित किया है ।मेले में जाने के लिए नये कपड़ों की खरीद की मांग को मा- बाप द्वारा पुरी न किये जाने की मजबुरी के उपरांत भी बालक के मेले में जाने का जोश ठंडा नही पडता । ....खाने की चीजो और खिलोना को देखकर उसका मन फिर ललचाता है । उनका मानना है कि कवीने इसके माध्यम से समस्त गाँव देहांत के गरीब बच्चों की स्थिति का चित्रण किया है ।" -९

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के अनुरूप हम निष्कर्ष रूप से कह सकते है की ,डॉ.अमित धर्मसिंह द्वारा लिखित काव्यमय आत्मकथा हमारे गाँव गाव में हमारा क्या है यह बचपन की यादों को साजरा किया है उनकी भोगी हुई पिडा कष्ट दुःख दर्द पुरे समाज का हो गया है दलित संवेदनाय उनकी आत्मकथा में दिखाई देती है गरिबी का कहर छोटे छोटे नुमा घर जहा संसाधन के अभाव मे आर्थिक संकटन से गिरा दलित समाज की झटपटाहट दिखाई देती है इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र

में जो शोषण का रूप है वह इमानदारी से उजागर किया है पाठक इसको पडकर स्वयं ही किसी नतीजे पर पोहोचणे को मजबूर हो जाता है और यह कार्य कवी द्वारा नही पाठक द्वारा आत्मप्रेरित होता है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१] सं .डॉ. राजन तनवर - हमारे गाँव हमारा क्या है ,के विविध पाठ – डॉ.रामनिवास [भाग- एक] समीक्षा संकलन पृ - ०७

२] डॉ.अमित धर्मसिंह- हमारे गाँव में हमारा क्या है ,बोधि प्रकाशन जयपुर 2019 पृ -० २

३] . अमित धर्मसिंह हमारे गाँव में हमारा क्या है – [समर्पण से उद्धृत किया है]

४] सं .डॉ. राजन तनवर - कश्मीर सिंह - हमारे गाँव में हमारा क्या है के विविध पाठ – [भाग- एक]समीक्षा संकलन पृ - ०७

५] डॉ. अमित धरमसिंह बचपन के पकवान पृ. ० ५

६] डॉ.अमित धर्मसिंह -बरसात पृष्ठ ६

७]कृष्ण सुकुमार -सं .डॉ. राजन तनवर - हमारे गाँव हमारा क्या है ,के विविध पाठ – [भाग- एक] समीक्षा संकलन पृ - ०७

८] वही ,पृ -१५९

९] पुष्पा विवेक, वही, पृ -१०